SUNDAY | 25.09.2022 | आश्विन अमावस्या विक्रम संवत-2079 | उत्तर प्रदेश

अमर उजाला

महानगर | वर्ष 26 | अंक 101 | पृष्ठ : 24 | मूल्य : सात रुपये | प्रयागराज | 6 राज्य 2 केंद्रशासित प्रदेश 22 संस्करण

# भारतीय ज्ञान परंपरा में नायकों की तलाश जरूरी : डॉ. के श्रीनिवास

झूंसी। साहित्य अकादमी नई दिल्ली के सचिव डॉ. के श्रीनिवास राव ने कहा है कि भारतीय परंपरा में नायकों की तलाश जरूरी है। भारतीय परंपरा में हमारे नायक कई रूप में दिखाई देते हैं। डॉ. राव ने ये बातें शनिवार को गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में शनिवार से शुरू हुई दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में कही। संगोष्ठी का आयोजन पंत संस्थान तथा साहित्य अकादमी नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया है।

संस्कृति और नायक विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि नायक का विचार सिर्फ कुछ लोगों तक सीमित नहीं है। भारत के विविधता पूर्ण संस्कृति में नायक विविधता से परिपूर्ण हैं। अगर हम भारतीय परंपरा को देखें तो उनमें नायक के कई रूप दिखाई देते हैं। कहा कि आज जरूरत है कि हम भारतीय ज्ञान परंपरा में नायकों की तलाश करें। पंत संस्थान के निदेशक प्रो. बद्रीनारायण ने कहा कि कोई समाज मिथक और नायकों के बिना नहीं रह सकता। प्रो. विश्वनाथ तिवारी ने कहा कि प्रत्येक समाज को नायकों की जरूरत होती है। कहा कि पश्चिमी देशों के नायक से भारतीय

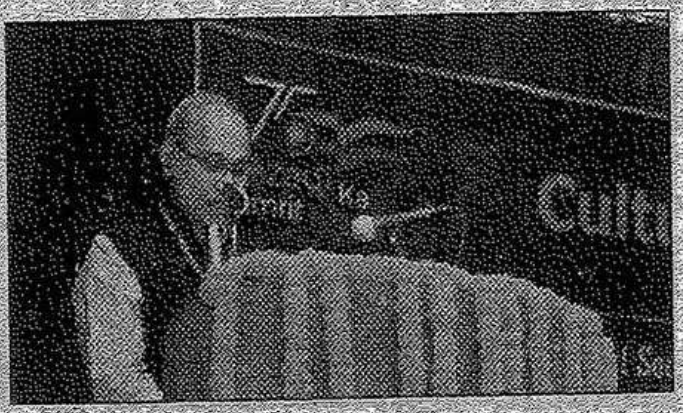

पंत संस्थान में संगोष्ठी को संबोधित करते डॉ. के श्रीनिवास राव। संवाद

नायकों से विविध रूपों में भिन्न हैं। पंत संस्थान के शासी मंडल के अध्यक्ष प्रो. टीवी कट्टिमनी ने कहा कि भारत में कई संस्कृतियां एक साथ चलती हैं। आदिवासी नायक की परिकल्पना मुख्य धारा के नायक से एकदम अलग है। साहित्य अकादमी के प्रो. माधव कौशिक कहा कि लोक नायक समाज की लाज के रक्षक होते हैं।

सत्र में सैद्धांतिकी पर राधावल्लभ त्रिपाठी, अरण कमल तथा नंद किशोर आचार्य, दूसरे सत्र जंगल के नायक आदिवासी नायक की अवधारणा पर काजी पटेल और नवल शुक्ला ने विचार रखे। तीसरे सत्र में पर्वत में नायक पर शेखर पाठक, लीलाधर जगूड़ी तथा प्रो. चितरंजन मिश्र ने विचार रखे। संवाद